स्त्री मुक्ति के दो पहलू : 'एक जमीन अपनी

डॉ. वृषाली विकास मिणचेकर अध्यक्षा, हिंदी विभाग,सहकारभूषण एस. के. पाटील महाविद्यालय, कुरूंदवाड़ (महाराष्ट्र)।

शोध सार

आधुनिक युग समाज के लिए चुनौतियों का युग है। इस युग में कई चुनौतियाँ मनुष्य के इर्द-गिर्द मुँह बाएँ खड़ी है, उसमें से एक है नारी विमर्श। आज साहित्य के केंद्र में स्त्री विषयक चिंतन प्रधान हो गया है। स्त्री के निजत्व को कुचलने के लिए उस पर कई बंधन डाले गए हैं। उसे दासत्व, सेवा, त्याग, कर्तव्य, संयम, समर्पण जैसे भावों से भरकर अपने अनुकूल बनाकर समाज में स्थापित किया है। स्त्री चाहकर भी गुलामी के इस चक्रव्यूह को भेद नहीं पा रही थी। इस स्थिति को विश्व में सबसे पहले 19 वीं शताब्दी के मध्य में कतिपय नारीवादी बुद्धिजीवियों ने सर्वप्रथम पश्चिम में तोड़ा। जिसका प्रभाव विश्व के हर कोने की स्त्री जाति में कम-ज्यादा मात्रा में पाया गया। स्त्री में अपनी दासता भरी जिंदगी से मुक्ति की चाहत निर्माण होने लगी।

नारी चेतना की संवाहिका चित्रा मुद्गल के पास अनुभवों का विपुल भंडार है। उनकी नारी चेतना स्त्री जीवन से जुड़कर उसकी यथार्थ स्थिति का विश्लेषण करती है।उन्होंने अपने साहित्य में नारी अस्मिता की पारंपरिक और आधुनिक छवि के बीच एक संतुलन बनाए रखने की चेष्टा की है। 'एक जमीन अपनी' उपन्यास के माध्यम से चित्राजी ने मूल्य और संस्कृति के सामान्य दर्शन पर सवाल उठाया है। अंकिता के माध्यम से आधुनिक स्त्री की तकलीफें सामाजिक आधार के साथ उन्होंने प्रस्तुत की है। लेखिका ने एक तरफ अंकिता के जीवन मूल्य, उसकी सिद्धांतवादिता, परिश्रम करने की आदत, समय की पाबंदी और परिवार के प्रति जुड़ाव दिखाया है तो दूसरी तरफ नीता के स्वभाव की उच्छृंखलता, समय के प्रति पाबंद न होना और जीवन के प्रति ज्यादा प्रैक्टिकल होना दिखाया है। अंत में अंकिता को सफल एडवरटायझिंग कंपनी की नौकरी दिलवाकर उसके सुदृढ़ भविष्य को दिखाया है तो दूसरी तरफ नीता के जीवन का दुखद अंत दिखाया है। अर्थात लेखिका ने जीवन के प्रति भारतीय मूल्यों का समर्थन किया है जो पारंपरिक ही है। जिसमें आदर्शों की जीत दिखाई है और स्वैराचार की हार दिखाई है।

बीज शब्द : 'एक जमीन अपनी, चित्रा मुद्गल, नारी चेतना, जीवन मूल्य एवं संस्कृति, पुरुषप्रधान मानसिकता, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी नारी, विलासी और उच्छृंखल नारी ।

विषय प्रवेश

प्रस्तावना :

आधुनिक युग समाज के लिए चुनौतियों का युग है। इस युग में कई चुनौतियाँ मनुष्य के इर्द-गिर्द मुँह बाएँ खड़ी है, उसमें से एक है नारी विमर्श। आज साहित्य के केंद्र में स्त्री विषयक चिंतन प्रधान हो गया है। भारतीय स्त्री युगों से शोषण एवं उत्पीड़न की शिकार होती आयी है। स्त्री के बारे में पुरुषप्रधान समाज की यह धारणा थी कि '' स्त्री शून्य के समान पुरुष की इकाई के साथ सब कुछ है परंतु उससे रहित कुछ नहीं।''1 अर्थात स्त्री को सदैव पुरुष की दृष्टि से ही जाँचा-परखा गया है, जिससे स्त्री के प्रति समाज की संवेदना पुरुष प्रधान रही है। समाज की इस पुरुष प्रधान मानसिकता के कारण स्त्री का निजत्व सदैव दाँव पर लगा है। स्त्री के निजत्व को, अस्मिता को कुचलने के लिए उस पर कई बंधन डाले गए, उसे पारंपारिक रुढ़ियों, मान्यताओं तथा अंधविश्वासों के घेरे में कैद करके रखा गया। उसे दासत्व, सेवा, त्याग, कर्तव्य, संयम, समर्पण जैसे भावों से भरकर अपने अनुकूल बनाकर समाज में स्थापित किया। स्त्री चाहकर भी गुलामी के इस चक्रव्यूह को भेद नहीं पा रही थी। अपमान, घुटन, दासता में उसने कई युग बीता दिए।

इस स्थिति को विश्व में सबसे पहले 19 वीं शताब्दी के मध्य में कतिपय नारीवादी बुद्धिजीवियों ने सर्वप्रथम पश्चिम में तोड़ा। जिसका प्रभाव विश्व के हर कोने की स्त्री जाति में कम-ज्यादा मात्रा में पाया गया। स्त्री में अपनी दासता भरी जिंदगी से मुक्ति की चाहत निर्माण होने लगी। नारी में मनुष्य के रूप में स्थापित होने की इच्छा जाग्रत होने लगी। नारी में बदलाव की यह जो चाहत निर्माण हुई उसे साहित्य की भाषा में नारी चेतना कहा गया। इसी चेतना के कारण नारी के परंपरागत रूप में परिवर्तन आने लगा। नारी ने अपने साहस और संघर्ष के बल पर अपने आप को पुरुष के समकक्ष ला खड़ा किया। आधुनिक काल में नारी की पहचान जिस रूप में है, वहाँ तक पहुँचने के लिए उसे अनेक पड़ावों से होकर गुजरना पड़ा। निस्संदेह ''नारी आज संक्रमण काल से गुजर रही है। उसका एक पाँव घर से बाहर निकला हुआ है, लेकिन दूसरा अभी भी घर की चार दीवारी में है। शिक्षा ने उसके क्षितिज को विस्तार अवश्य दिया, पर घर-परिवार की लक्ष्मण रेखा उसे अब भी घेरे हुए हैं। अब भी वह पिता की दृष्टि में दान और पति की दृष्टि में भोग की वस्तु है।''2 इस पुरुषप्रधान मानसिकता से बाहर निकलने के लिए स्त्री को कई

विद्रोह करने पड़े, जिसके कारण उसकी स्थिति में कुछ हद तक परिवर्तन नज़र आ रहा है। आधुनिक काल में एक ओर यह परिवर्तन सुखद लगता है कि आधुनिक नारी की मानसिकता तथा सोच में परिवर्तन हो रहा है। तो दूसरी ओर स्त्री मुक्ति विचारधारा का गलत उपयोग कर कुछ आधुनिक कहलानेवाली स्त्रियाँ स्वैराचार की ओर झुकती नज़र आ रही है। यह नारी श्लील-अश्लील, नैतिक-अनैतिक, पाप-पुण्य की परिभाषा भूल रही है। समस्याओं को सुलझाने के बजाय उन्हें बाईपास करते जाने की कामचलाऊ सोच से वह परिचित है। जिसके कारण वह भटकाव का शिकार हो रही है। यह नारी पुरानी व्यवस्था से निकलकर बाज़ारी संस्कृति का अंग हो गई है। ''आज चाहे टायर का विज्ञापन हो, बैटरी का अथवा तम्बाकू का, नारी का इस्तेमाल बड़े ही भौंडे तरीके से होने लगा है और इतना ही नहीं वह इस्तेमाल होकर भी प्रसन्न है। अतिमहत्त्वाकांक्षा के मोह ने नारी को काफी नीचे गिरा दिया है।''3 हिंदी लेखिकाओं ने नारी जीवन के इन उतार-चढ़ावों का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। इन लेखिकाओं में चित्रा मुद्गल का स्थान महत्त्वपूर्ण है। चित्रा मुद्गल आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य की बहुचर्चित और सम्मानित लेखिका है। नारी चेतना की संवादिका चित्रा मुद्गल के पास अनुभवों का विपुल भंडार है। उनकी नारी चेतना स्त्री जीवन से जुड़कर उसकी यथार्थ स्थिति का विश्लेषण करती है। घर से दफ्तर तक हाँफती महिलाएँ, पति की व्यभिचारी वृत्ति का दंश झेलती गृहिणियाँ मन की गहराइयों में उतरती हुई दिखाई देती है। उन्होंने अपने साहित्य में नारी अस्मिता की पारंपारिक और आधुनिक छवि के बीच एक संतुलन बनाए रखने की चेष्टा की है।

चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'एक जमीन अपनी' उनका पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में उन्होंने विज्ञापन की दिखावटी और भ्रष्ट दुनिया में अपनी स्वाधीनता और आधुनिकता खोजती मध्यमवर्गीय स्त्री के अंतर्विरोधी संघर्ष को बहुत ही संतुलित एवं सधेपन से उठाया है। यह उपन्यास विज्ञापन संस्कृति की घटिया नीति के बीच संघर्ष कर रही दो युवतियों अंकिता और नीता के माध्यम से नारी समानता के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को द्वंद्वात्मक रूप में रखकर समाज को सोचने के लिए बाध्य करता है। 'एक जमीन अपनी' उपन्यास की नायिका अंकिता एक पढ़ी-लिखी, आधुनिक युवती है। परिवार की इच्छा के विरूद्ध वह सुधांशु से प्रेम विवाह करती है। और अंत में इस विवाह को इसलिए तोड़ती है कि उसे लगता है कि जो सम्मान पति के घर में उसे मिलना चाहिए, वह उसे नहीं दिया जा रहा है। अंकिता पति की एय्याशियों एवं ज्यादतियों का विरोध करती है। केवल एक वस्तु के रूप में पति के घर में रहना उसे मंजूर नहीं है। वह अपनी खुद की जमीन, खुद का अस्तित्व चाहती है। किंतु उसकी यह उम्मीद टूट जाती है। वह पति के घर में घुटन महसूस करती है- ''मैं घर को जीना चाहती हूँ, बरदाश्त करना नहीं।''4 पुरुषप्रधान समाज में स्त्री की इतनी छोटी इच्छा भी आसानी से पूरी नहीं हो पाती। मजबूर होकर वह पति का घर त्याग देती है। अब समाज में उसकी छवि परित्यक्ता, अकेली नारी की है। अंकिता स्वाभिमानी लड़की है, वह आत्मसम्मान एवं आत्मबल से अपने आप आप सबकुछ प्राप्त करना चाहती है। उसे शॉर्टकट का रास्ता मंजूर नहीं है। वह एक विज्ञापन कंपनी में फ्रीलांसिंग का काम कर रही है। लेकिन उसे कोई पक्की नौकरी नहीं मिल रही है। उसके काम की तारीफ भी होती है लेकिन नौकरी पाने के लिए जो तिकड़में करनी होती है, उससे वह दूर रहना चाहती है। वह अपने उसूलों से समझौता न करके अपने लिए एक छोटीसी जमीन का टुकड़ा पाना चाहती है, जहाँ वह अपनी आकांक्षा के पौधे रोपित कर सके। इस सफर में उसे कई जहरीलें घूँट पीने पड़ते हैं, पुरुष की वासनाभरी नज़रों का सामना करना पड़ता है। किंतु अंकिता के चरित्र का यह सबसे सबल पक्ष है कि उसे अपने आत्म-स्वाभिमान को ताक में रखना बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं है। नशे में धुत सक्सेना के बहकने पर वह उसे चेतावनी दे डालती है-''दिस शोल्डर बिलोंग्ज टू मी .... अपना हाथ अपनी जगह पर रखेंगे या मैं उसे जगह बताऊँ।''5 हालांकि यह बेबाकी उसे अपने कैरियर के रास्ते में कई जगह भारी पड़ती है। अंकिता अपनी जिंदगी में आए भयानकर उतार-चढ़ावों का धैर्य से सामना करती है।

पति अथवा पुरुष से प्रतिशोध लेना उसका उद्देश्य नहीं है बल्कि अपनी अस्मिता को वह बरकरार रखना चाहती है। इसी चाहत में वह पति से संबंध विच्छेद कर स्त्रीत्व की पूर्णता के भ्रम से मुक्त हो जाती है। उसका यह दृष्टिकोण उसे अपने कैरियर एवं जीवन में सफल बनाता है। उपन्यास के अंत में पति सुधांशु के पुन: बुलाने पर वह कहती है- ''औरत बोनसाई का पौधा नहीं है...जब जी चाहा, उसकी जड़ें काटकर उसे वापस गमले में रोप लिया...वह बौना बनाए रखने की साजिश को अस्वीकार भी तो कर सकती है।''6 चित्राजी ने अंकिता को एक आधुनिक शिक्षा प्राप्त झुजारू लड़की के रूप में चित्रित किया है, जो अकेली संघर्ष करती हुई अपनी पहचान बनाती है। वह पुरुष के सहारे आकाश को छूना नहीं चाहती बल्कि उसे पैरों के नीचे अपनी बनाई जमीन चाहिए। वह पुरुष बनकर सक्षम नहीं होना चाहती बल्कि स्त्री के ही रूप में सक्षम बनना चाहती है। वह अपनी सहेली नीता से कहती है- ''तुम्हारा स्त्री समानता दृष्टिकोण मर्द बनना है...मर्दों की भाँति रहना...वे समस्त आचार-व्यवहार, व्यवस्थाएँ अपनाना...यही समानता का दृष्टिकोण है? स्त्री को समाज में समान अधिकारों के नाम पर इन्हीं उच्छृंखलताओं और अनुशासनहीनता की चाह है? प्रश्न उठता है नीता...जब ये अध्ययस्थाएँ मर्दों के लिए नैतिक,

अमानवीय, दुराचरण और निरंकुशताएँ है तो स्त्री के लिए उचित कैसे हो सकती है।''7 अंकिता के माध्यम से चित्राजी स्वयं यह चाहत स्त्री वर्ग के सामने रखना चाहिए है कि भारतीय नारी स्वाभिमानी, स्वाश्रयी एवं काबिल बने। वह अपने पैरों के नीचे अपनी जमीन की तलाश करे। पुरुष से प्रतिशोध लेना या समाज को अपनी ताकत दिखाने के लिए मर्दों की तरह हरकते करना यह स्त्री मुक्ति नहीं है बल्कि अपनी मर्यादा में रहकर, अपने स्त्रीत्व की हिफाजत कर, सही रास्ते पर चलकर अपनी मंजिल हासिल करना ही सही आज़ादी है। अंकिता की इसी सोच के कारण अंत में नीता अपनी बेटी मानसी को पूर्ण विश्वास के साथ उसे सौंपती है।

आधुनिक समाज में स्त्री के दो रूप दिखाई दे रहे है। एक ओर तो वह अपनी मर्यादा, नैतिकता का रक्षण कर प्रगति पथ पर है तो दूसरी ओर वह पतन के गहरे गर्त में डूबती जा रही है। कुछ आधुनिक स्त्रियों ने ''केवल वस्तु की तरह, शो पीस की तरह अपने को लोगों के सामने रखा है। उसने चंद पैसों के लिए सत्ता, अधिकार, नाम के लिए अपने ईमान को बेचा दिखाई देता है। उसका सफर इस युग में जितना दयनीय और निराशाजनक है उतना किसी काल में, किसी युग में दिखाई नहीं देता।''8 'एक जमीन अपनी' की दूसरी पात्र अंकिता की सहेली नीता ऐसी ही युवती है जो खुले आसमान में आज़ाद पंछी के समान विचरण करती रहती है। सुंदर होने के कारण वह सफल मॉडल बनना चाहती है। विज्ञापन तथा विवरण की प्रतियोगिता के जगत में वह घोसला छोड़, नए-नए स्थानों की खोज में हमेशा भटकती रहती है। स्वतंत्र एवं स्वच्छंद मानसिकता की धनी नीता अन्य स्त्रियों की तुलना में बिल्कुल भिन्न सोचती है। उसका जीवन दर्शन है -''एक बार अपनी तरह से रहने की आदत पड़ जाय तो दूसरों की आदतों में जीना घुटन बन जाता है...चाहे वह उसकी माँ ही क्यों न हो।''9 उसे पता है उसे क्या चाहिए और वह उसे पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है। फिर चाहे पुरुषों को अपनी उंगलियों पर नचाना हो या तिकड़में लगाकर नौकरी की तलाश करता हो। वो जानती है कि समझौतों के बिना वो अपनी इच्छाएँ पूरी नहीं कर सकती है और उसे समझौते करने में परहेज भी नहीं है। तिलक की नज़र में नीता 'उसकी एक रात की कीमत है ओबेराय का डिनर, स्टुडियो 210 की रंगीन शाम, तेजपाल का आखिरी शो या खंडाला की आउटिंग।' मि. गुहा, सक्सेना और न जाने कितनों के संबंधों के प्रवाह ओढ़ती हुई नीता मॉडल के रूप में अपनी जगह बनाती है। वह अपनी बुद्धि और प्रतिभा को ग्लैमर की दुनिया में बेचती है। नीता अपने शरीर, स्वत्व को दाँव पर लगाकर सामाजिक सीमाओं को लाँघकर सबकुछ पा लेना चाहती है। नीता की यह सोच नारी समाज को खतरे में डाल सकती है। नीता आदर्श, नीति, मर्यादा के वस्त्रों के चिथड़े करती सुधीर को समर्पित होती है। किंतु जैसा कि सुधीर की पत्नी ने कहा था, वह सुधीर के लिए महज एक 'फिल्म' थी, जिसे वह कुछ दिन तक ओढ़ता-बिछाता रहा। सुधीर की उपेक्षा से हुआ मोहभंग उसके महत्त्वाकांक्षी मन को गहरे पराजय बोध से भर देता है। जिसके कारण वह अपना जीवन समाप्त करती है। और अपनी बेटी मानसी को अंकिता को सौंपती है। नीता की इस कृति का अर्थ यही है कि अंत में उसे अंकिता की सोच ही सही लगती है और वह अंकिता के विचारों से सहमत होती है।

निष्कर्षत:

'एक जमीन अपनी' उपन्यास के माध्यम से चित्राजी ने मूल्य और संस्कृति के सामान्य दर्शन पर सवाल उठाया है। अंकिता के माध्यम से आधुनिक स्त्री की तकलीफें बड़े सामाजिक आधार के साथ उन्होंने प्रस्तुत की है। अंकिता जैसी युवतियों में प्रेम है, विद्रोह और विश्वास भी है और सबसे बढ़कर चुनौती है। उनमें सजगता इतनी है कि वे किसी बहकावे में जल्दी आनेवाली नहीं है। ये चीजों और घटनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में देखती है। अंकिता संवेदनशील है। गलत को गलत कहने और अपने विरूद्ध रचे मकड़जाल को तोड़ने का साहस भी उसमें है। अंकिता के माध्यम से लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि अब केवल परिवार ही स्त्री विकास की सीमा नहीं रही। बल्कि आधुनिक शिक्षा ने उसे अपने अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की पहचान करायी है। आज की स्त्री ने अपने दास्यत्व एवं पराधीनता के प्रति बगावत की है। नारी का स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत होना एवं आज की स्थितियों के अनुरूप मुक्त जीवन की माँग करना नारी चेतना का ही सूचक है। आज की नारी पुरुष की अनुगामिनी न बनकर सहकर्मिणी बनना चाहती है। फलत: जहाँ उसे यह समानता नहीं मिलती उस रिश्तें को तोड़ना ही वह बेहतर मानती है। किंतु एक और बात चित्राजी ने स्पष्ट की है कि अपनी अस्मिता, स्वत्व के लिए स्त्री विद्रोह जरूर कर सकती है किंतु स्वैराचार की ओर झुकना स्त्री की मुक्ति नहीं है। नीता जैसी नारियाँ अपनी आज़ादी का गलत उपयोग कर, नैतिक मूल्यों को ठुकराकर उन्मुक्त जीवन जीती हुई नज़र आ रही है। पुरुष की बराबरी करने की होड़ में उसने अपनी पवित्रता ताक पर रख दी है। स्वैर जीवन का आकर्षण उसमें बढ़ता हुआ नज़र आ रहा है। संक्षेप में लेखिका ने एक तरफ अंकिता के जीवन मूल्य, उसकी सिद्धांतवादिता, परिश्रम करने की आदत, समय की पाबंदी और परिवार के प्रति जुड़ाव दिखाया है तो दूसरी तरफ नीता के स्वभाव की उच्छृंखलता, समय के प्रति पाबंद न होना और जीवन के प्रति ज्यादा प्रैक्टिकल होना दिखाया है। अंत में अंकिता को सफल एडवरटायझिंग कंपनी की नौकरी दिलवाकर उसके सुदृढ़ भविष्य को दिखाया है तो दूसरी तरफ

नीता के जीवन का दुखद अंत दिखाया है। अर्थात लेखिका ने जीवन के प्रति भारतीय मूल्योंका समर्थन किया है जो पारंपरिक ही है। जिसमें आदर्शों की जीत दिखाई है और उच्छृंखलता-स्वैराचार की हार दिखाई है।

संदर्भ सूची :-

1. श्रृंखला की कड़ियाँ - महादेवी वर्मा, पृ. 115
2. महिला विकास कार्यक्रम एवं योजनाएँ- रिचा भुवनेश्वरी, पृ. 12
3. आधुनिक एवं हिंदी कथा- साहित्य में नारी का बदलता रूप- संपा. डॉ. मुदिता चंद्रा, डॉ. सुलक्षणा टोप्पो, पृ. 172
4. एक जमीन अपनी - चित्रा मुद्गल, पृ. 18
5. वही, पृ. 40
6. वही, पृ. 120
7. वही, पृ. 120
8. इक्कीसवीं सदी का कथा -साहित्य - संपा. डॉ. सुरैय्या शेख, पृ. 24
9. एक जमीन अपनी - चित्रा मुद्गल, पृ. 24